بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-06.05.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 6 मई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के बारे में पिछले ख़ुत्बों में जो वर्णन हुआ था सैनिक दल भिजवाने का, उनका कुछ विस्तार पूर्वक बयान करता हूँ ताकि उस समय की परिस्थितियों की जटिलता का भी कुछ अनुमान हो जाए।

गयारह सैन्य अभियानों में से पहले का सविस्तार वर्णन-

जैसा कि वर्णन हुआ था गयारह अभियान हुए उनमें से पहले का विस्तृत वर्णन कुछ यूँ है जो तुलेहा बिन ख़ुवैलिद, मालिक बिन नवेरा, सजाह पुत्री हारिस तथा मुसैलमा कज़्ज़ाब इत्यादि विद्रोही मुर्तदों (इस्लाम से विमुख) तथा झूठे नबियों का विनाश करने के लिए भेजा गया था। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. ने एक झंडा हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के हवाले किया और आप रज़ी. को आदेश दिया कि तुलेहा बिन ख़ुवैलिद के मुक़ाबले के लिए जाएँ तथा उनसे निपट कर बुताह में मालिक बिन नुवेरा से लड़ें, यदि वे लड़ाई पर डटे हों तो फिर लड़ना है। एक रिवायत के अनुसार आप रज़ी. ने हज़रत साबित बिन क़ैस को अन्सार का अमीर नियुक्त किया तथा उन्हें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के आधीन करक हज़रत ख़ालिद रज़ी. को आदेश दिया कि वे तुलेहा तथा उयीना बिन हिस्न के मुक़ाबले पर जाएँ जो बनू असद के एक स्रोत पर ठहरे हुए थे।

अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार-

जब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इस्लाम से विमुख लोगों से युद्ध के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. के लिए झंडा बाँधा तो फ़रमाया! मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. अल्लाह का बहुत ही अच्छा बन्दा है और हमारा भाई है जो अल्लाह की तलवारों में

से एक तलवार है जिसे अल्लाह तआला ने काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) के विरुद्ध सोंता है। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को तुलेहा तथा उयीना की ओर भेजा, इन दोनों विरोधियों का संक्षिप्त परिचय भी पेश है।

धार्मिक पेशवा तुलैहा और उयीना दोनों विरोधियों का संक्षिप्त परिचय–

तुलैहा बिन ख़ुवैलद बिन नौफ़िल बिन नदला अलअसदी नबुव्वत के झूठे दावे करने वालों में से एक था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में अन्तिम दौर में प्रकट हुआ, आप स. के जीवन काल में ही इस्लाम से विमुखता का शिकार हुआ, नबुव्वत का दावा कर बैठा तथा समीरा नामक स्थान को अपना सैन्य अड्डा बनाया।

जब इसने दावा किया तो जनता इसकी अनुयायी हो गई, लोगों के पथभ्रष्ट होने का पहला कारण तो यह हुआ कि वह अपनी क़ौम के साथ एक यात्रा पर था, पानी समाप्त हो गया तो लोगों को बड़ी प्यास लगी, चालाकी दिखाते हुए उसने लोगों से कहा! तुम मेरे घोड़े एलाल पर सवार होकर कुछ मील दूर तक जाओ, वहाँ तुम्हें पानी मिलेगा। उन्होंने ऐसा ही किया तथा उन्हें पानी मिल गया। इस कारण से देहाती लोग इस फ़ितने का शिकार हो गए। इसकी असत्य बातों में से एक यह भी थी कि उसने नमाज़ में से सजदों को समाप्त कर दिया था तथा यह दावा था कि आसमान से उस पर वह्यी आती है तथा कविता एवं तुक बन्दी के साथ पदावली इबारतें वह्यी के रूप में पेश किया करता था। इतिहास से ज्ञात होता है कि इस्लाम से पहले के ज़माने में धार्मिक गुरु तुक बन्दी के साथ इबारतें लोगों के सामने पेश करके उन पर रौब बिठाते थे, तुलैहा भी काहिन था, तुलैहा असदी के अहंकार ने उसको धोखे में डाला।

उसका मसला ज़ोर पकड़ गया, उसकी शक्ति बढो और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसके मामले की सूचना मिली तो आप स. ने ज़रार बिन आज़ूर असदी को उससे लड़ने के लिए भेजा किन्तु ज़रार के बस की बात नहीं थी, क्यूँकि समय के साथ साथ उसका प्रभाव बढ़ चुका था, विशेष रूप से असद तथा ग़तफ़ान दोनों मित्र क़बीलों के उस पर ईमान ले आने के बाद उसकी शक्ति और अधिक हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हो गया तथा तुलैहा के मामले का निबटारा न हुआ। जब ख़िलाफ़त की बाग डोर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने संभाली तथा विद्रोही मुर्तदों को कुचलने के लिए सेना तय्यार की तथा प्रमुख नियुक्त किए तो उसकी ओर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के नेतृत्व में सेना भिजवाई। ये केवल इस्लाम से फिरे हुए लोग नहीं थे अथवा केवल नबुव्वत के दावेदार नहीं थे बल्कि ये मुसलमानों से युद्ध भी किया करते थे तथा उनको हानि पहुंचाने का प्रयास भी करते थे।

उयीना हिस्न कौन था?

यह मक्का पर विजय से पहले इस्लाम लाया, यह हुनैन तथा ताइफ़ की लड़ाई में भी सम्मिलित था, फिर सिद्दीक़ी दौर में विद्रोही मुर्तदों के साथ यह इस्लाम से विमुखता का शिकार हुआ तथा तुलैहा से प्रभावित हो गया, उसने बैअत कर ली, अतएव फिर बाद में इस्लाम की ओर भी लौट आया था।

जब अब्स, ज़ुबयान तथा उनके समर्थक बुज़ाख़ा नामक स्थान पर जमा हो गए तो तुलैहा ने बनू जदीला और ग़ौस को जो कि क़बीला तै की दो शाखाएँ थीं, कहला भेजा कि तुम तुरन्त मेरे पास आ जाओ, अतः ऐसा ही हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को ज़ुलक़स्सा से रवाना करने से पहले अदी रज़ी. से कहा कि तुम अपनी क़ौम अर्थात क़बीला तै के पास जाओ, ऐसा न हो कि वे नष्ट हो जाएँ।

हज़रत अदी रज़ी. अपनी क़ौम के पास आए, उनको इस्लाम की दावत दी और चेतावनी दी। उन्होंने कहा- अबुल फ़सील (कुछ लोग अपमान तथा घृणा के कारण हज़रत अबू बकर रज़ी. को ऊँट के बच्चे का बाप कहते थे) का कदाचित आज्ञा पालन नहीं करेंगे। हज़रत अदी रज़ी. ने निर्दयी आक्रमणकारी सेना का आगे बढ़ना, हत्या एवं विनाश के बाज़ार में अग्रसर होने तथा किसी को शरण न मिलने पर चेतावनी देने तथा समझाने के बाद कहा! फिर उस समय तुम हज़रत अबू बकर रज़ी. को फ़हलुल अकबर (हर एक पशु का नर) के उपनाम से याद करोगे। क़बीला तै के लोगों ने उनकी बातें सुनकर कहा कि अच्छा तुम इस हमला करने वाली सेना से जाकर मिलो तथा उसे हम पर हमला करने से रोको, यहाँ तक कि हम अपने इन साथियों को जो बज़ाख़ा में हैं वापस बुला लें। हमें आशंका है कि यदि हम तुलैहा का विरोध करेंगे, जबकि हमारे लोग उसके क़बज़े में हैं तो वह उन सबकी हत्या कर दगा अथवा उनको ज़मानत के रूप में बन्दी बना लेगा।

हज़रत अदी रज़ी. के हज़रत ख़ालिद रज़ी. को अपने क़बीले तै के दोबारा इस्लाम ले आने की सूचना देने तथा उपरोक्त पृष्ट भूमि में एक लेखक ने लिखा है कि- हज़रत अदी रज़ी. का यह महान कृत्य है कि उन्होंने अपनी क़ौम को इस्लामी सेना में शामिल होने का निमन्त्रण दिया।

बनू तै का ख़ालिद रज़ी. की सेना में शामिल होना दुश्मन की पहली हार थी क्यूँकि उनकी गणना अरब महाद्वीप के सशक्त क़बीलों में होती थी तथा अन्य क़बीले उनको महत्त्व देते थे।

तत्पश्चात हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने क़बीला जदेला के मुक़ाबले के विचार स अन्सर नामक स्थान की ओर पलायन किया, इस पर हज़रत अदी रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. से कहा कि क़बीला तै का उदाहरण एक पक्षी की भांति है तथा क़बीला जदेला बनू तै की दो भुजाओं में से एक भुजा है। आप रज़ी. मुझे कुछ दिनों का समय दें, सम्भवतः अल्लाह तआला जदेला को भी सीधे रास्ते पर ले आए जिस प्रकार उसने ग़ौस अर्थात क़बीला तै की दूसरी शाखा को गुमराही से निकाल लिया है। अतः हज़रत अदी रज़ी. की निरन्तर बात चीत के परिणाम स्वरूप उन्होंने भी हज़रत अदी रज़ी. को बैअत की और आप रज़ी. क़बीला जदेला के एक हज़ार सवारों के साथ मुसलमानों के पास आ गए।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. क़बीला तै के इस्लाम क़बूल करने के बाद तुलैहा असदी की ओर रवाना हुए। आप रज़ी. ने हज़रत उकाशा रज़ी. बिन मुहसिन और हज़रत साबित रज़ी. बिन अक़रम को दुश्मन की ख़बर लाने के लिए आगे भेजा किन्तु दुश्मन ने इन दोनों ही को शहीद कर दिया। इस परिस्थिति के परिणाम में हज़रत ख़ालिद रज़ी. तुलैहा के मुक़ाबले के लिए अपनी सेना को संगठित करने लगे तथा बुज़ाख़ा नामक स्थान पर दोनों का मुक़ाबला हुआ तथा उन लोगों की हार हुई। तुलैहा अपने घोड़े पर सवार हुआ तथा अपनी पतनी को भी सवार किया फिर उसके साथ भाग गया तथा अपने साथियों से कहा कि तुममें से जो कोई भी इसका सामर्थ्य रखता हो, युद्ध के मैदान से दौड़ जाए। एक रिवायत के अनुसार तुलैहा युद्ध स्थल से भाग कर नक़ा नामक स्थान पर बनू क़लब के पास जाकर ठहर गया तथा वहाँ जाकर इस्लाम ले आया।

फिर जब अल्लाह तआला ने बनू फ़ज़ारा और तुलैहा को करारी हार दी तो बनू आमिर, सलीम तथा हवाज़िन नामक क़बीले यह कहते हुए आए कि जिस दीन से हम निकले थे, हम फिर उसी में दाख़िल होते हैं, वे स्वयं ही आकर इस्लाम में शामिल हो गए।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने बनू आमिर, असद, ग़तफ़ान, हवाज़िन, सुलीम तथा तै सहित किसी की बैअत उस समय तक स्वीकार नहीं की जब तक कि उन्होंने उन समस्त लोगों को जिन्होंने इस्लाम से विमुखता की दशा

में अपने हाँ के मुसलमानों को आग में जलाया था तथा उनके शवों को कुचला था तथा मुसलमानों पर चढ़ाइ की थी कि उनको मुसलमानों के हवाले न कर दिया। आप रज़ी. ने इसका विवरण हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में भी भिजवाया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उत्तर देते हुए लिखा कि जो कुछ तुमने किया तथा सफलता तुमको प्राप्त हुई, अल्लाह त़मको इसका बदला प्रदान करे, तुम अपने हर काम में अल्लाह से डरते रहो- إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ (सूरः नहल-129) निःसन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़्वा धारण करते हैं तथा जो उपकार करने वाले हैं, तुम अल्लाह के काम में पूरा संघर्ष करना तथा आलस्य मत करना। वे लोग जिन्होंने ख़ुदा के आदेश का आज्ञा पालन न किया हो तथा इस्लाम के शत्रु हों, उनकी हत्या से यदि इस्लाम को लाभ मिलता हो तो वध कर सकते हो। हज़रत ख़ालिद रज़ी. एक महीना बुज़ाख़ा में ठहरे रहे तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. के आदेशानुसार अपराधियों को कठोर दंड दिया।

हज़रत ख़ालिद रज़ी. न बनू आमिर के मामले का निबटारा करके तथा उनसे बैअत लेने के बाद उयीना बिन हिस्न और क़रा बिन हवेरा को बन्दी बना कर हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास भेज दिया। आप रज़ी. ने उनको क्षमा कर दिया तथा उनको जीवन दान दिया।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के ज़फ़र नामक स्थान की ओर जाने, उम्मे ज़िमल सलमा सुपुत्री मालिक सुपुत्री हुज़ैफ़ा, जिसने ग़तफ़ान, तै, सुलीम तथा हवाज़िन के कुछ लोगों ने बज़ाख़ा में हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के हाथों परजित हुए थे, उन लोगों को उनकी हार पर शर्म दिला कर फिर स्वयं भी विभिन्न क़बीलों में बार बार चक्कर लगा कर उनको युद्ध के लिए उकसाया था, उससे अति घोर युद्ध, उम्मे ज़मल ही हत्या, शेष बचे साथियों की बोखलाहट तथा पलायन का विवरण बयान करने के बाद इरशाद फ़रमाया- इस प्रकार इस फ़ितने की आग ठंडी हो गई तथा अरब महाद्वीप के उत्तर पूर्वी भाग में इस्लाम से विमुखता एवं विद्रोह समाप्त हो गया, तथा फ़रमाया- यह वर्णन अभी आगे भी इंशाअल्लाह हज़रत अबू बकर रज़ी. के बारे में बयान होगा, इस समय इतना ही बयान करता हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने दूसरे ख़ुत्बः से पहले मुकर्रमा साबरा बेगम साहिबा पतनी मुकर्रम रफ़ीक़ अहमद बट साहब ऑफ़ सियालकोट और मुकर्रमा सुरय्या रशीद साहिबा पतनी मुकर्रम रशीद अहमद बाजवह साहब ऑफ़ वर्तमान निवासी कैनेडा का सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131